शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कवि अरूण कमल के काव्य में सामाजिक और मानवीय सन्दर्भ

परमानंद पाटीदार (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत
डॉ.अनुपमा छाजेड़ (प्राचार्य एवं निर्देशक)
श्री मां उमिया कन्या महाविद्यालय
शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
राऊ, जिला इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कविता मन की अनुभूतियों को स्वर प्रदान कर समाज के सम्मुख प्रस्तुत करती है। कविता के माध्यम से कवि समाज की वास्तविकता व मानवीय संवेदनाओं को समाज के सामने प्रकट करने की कोशिश करता है। समकालीन कवि अरूण कमल ने सामाजिक व मानवीय सन्दर्भ के द्वारा समाज को नई दिशा प्रदान करने के लिये कविता को माध्यम बनाया है। 'साहित्य समाज का दर्पण है' कि उक्ति को सार्थक करते हुए कवि अरूण कमल ने समाज के सम्मुख प्रत्येक सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। मानवीय संवेदनाओं की अनुभुति में उन्होंने साधारण व्यक्ति की आकुलता, विवशता और त्रासदी की गंभीरता व गहराई को समाज के सामने प्रकट किया है तथा उन्हें अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। मनुष्य को सामाजिक व मानवीय कर्तव्यों को इस तरह से पूर्ण करना चाहिए कि समाज को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त हो। प्रस्तुत शोध पत्र में अरूण कमल के काव्य में सामाजिक एवं मानवीय सरोकारों पर प्रकाश डाला गया है।

भूमिका

कवि अरूण कमल एक ऐसे रचनाकार है जिनका जीवन समकालीन परिस्थितियों से अछुता नहीं रहा है। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कवि अरूण कमल ने समाज में व्याप्त विभिन्न पक्षों का उद्घाटन किया है। समाज में व्याप्त विसंगतियों, अन्याय, भ्रष्टाचार, निरक्षरता, पक्षपात, राजनीतिक ईर्ष्या, साम्प्रदायिक भेदभाव आदि विभिन्न पक्षों को अभिव्यक्त किया है। मानवीय गुणों व अवगुणों से उत्पन्न समाज को प्रभावित करने वाले विभिन्न पक्षों को कविता के द्वारा प्रकट किया है। कवि अरूण कमल ने समकालीन वातावरण व परिदृष्य में जो घटित हो रहा है उसका तटस्थता के साथ वर्णन किया है। सन 1980 में प्रकाशित 'अपनी केवल धार' कवि का प्रथम काव्य संग्रह है। इसके अलावा सबूत, नये इलाके में, पुतली में संसार तथा मैं वो शंख महाशंख' संग्रह में विभिन्न संदर्भों जैसे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक सांप्रदायिक, मानवीय, वैश्विक, प्रकृति एवं पर्यावरण आदि को काव्य विषय बनाया है। अरुण कमल को 'नये इलाके में' संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

सामाजिक संदर्भ

अतीत के सामाजिक संदर्भ व वर्तमान के सामाजिक संदर्भ में अत्याधिक अन्तर है। आज की सामाजिक स्थिति में आतंक, शोषण, अविश्वास, अनाचार, कपट, असहयोग की भावना इतनी बढ़ रही है कि इन्होंने ही मूल्यों की जगह ले ली है, जो सामज के लिए घातक है। अब आम लोगों में वह पहले जैसा भाईचारा, विश्वास, मेलजोल, संस्कार तिरोहित होते जा रहे हैं। पड़ोस से आत्मीय संबंधों की दुनिया अपने ही परिवार तक सिमट आई है। जहां जाते हैं, वहां पर अंतर्कलह है। परिणामस्वरूप व्यक्ति अकेला रह गया है। समाज को नई दिशा व समाज के दोषों को दूर करने के लिए वास्तविकता को प्रकट करना आवश्यक है और यह अरूण कमल की विभिन्न रचनाओं में अभिव्यक्त सामाजिक सन्दर्भों से स्पष्ट होता है। अरूण कमल प्रतिबद्ध कवि हैं और अपने देशकाल, वातावरण व परिवेश के प्रति सक्रिय व सजग हैं। उनकी अधिकांश कविताओं में कथ्य का संबंध राजनीति, मजदूर और परिवेश से हैं, लेकिन उनका मूल स्वर सामाजिक ही है।

सामजिक संवेदनहीनता को 'अपनी केवल धार' में उजागर करते हुए अरुण कमल लिखते हैं

'' अखबारों में खबर थी,
केलिफोर्निया की एक कुतिया ने तेरह बच्चे एक साथ जने।
एक खबर जो कहीं नहीं थी
किश्ता गौड़ को फांसी हो गई
एक खबर जो खबर नहीं थी
भूमैया को फांसी हो गई।"[1]

समाज को गहराई तक प्रभावित करने वाली खबर नहीं है और सुदूर केलिफोर्निया का समाचार अखबारों की प्राथमिकता है। गरीब परिवारों में बच्चे भी मजदूरी करने को बाध्य हैं। बाल मजदूरी के शोषण को उजागर किया है। होटल में खाना परोसने वाला बच्चा भूखा है। उसके पास आंसूओं के अलावा कुछ नहीं है। सामाजिक शोषण का यह बिम्ब देखिये :

"जैसे ही कौर उठाया
हाथ रूक गया
सामने किवाड़ से लगकर
रो रहा था वह लड़का
जिसने मेरे सामने रक्खी थी थाली।"[2]

समाज में व्याप्त भुखमरी व मजबूरी को व्यक्त किया गया है। जो बच्चा खाना परोस रहा है वह बच्चा भूखा है। भूखे बच्चे के सामने खाना हो ओर वह खा नहीं पाए, इससे ज्यादा बड़ी विडम्बना समाज के सामने क्या हो सकती है ?

समाज की वास्तविक स्थिति को अरूण कमल गर्भवती स्त्री की मनोदशा व स्थिति के द्वारा व्यक्त करते हैं। गर्भवती स्त्री को स्नान करने के लिए जल नहीं मिल पाता है और वह गर्भवती स्त्री फुटपाथ पर स्नान के लिए विवश है। गर्भपात का खतरा उठाते हुए नल से डोल में पानी लाने के लिए मजबूर है-

भौजी, हाथ में डोल लिये
मत जाना नल पर पानी भरने
तुम गिर जाओगी
और बउआ....."[3]

अरूण कमल की कविताओं में परिवार सहजता और स्वभाविकता से अभिव्यक्त हुआ है। उनके पास स्थानीय भाषा के शब्दों का भण्डार है। वह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कविता में सहज रूप से आ जाती है। उससे कविता की मार्मिकता और सौन्दर्य बढ़ जाता है। अरूण कमल का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति का समाज के विकास में सकारात्मक योगदान हो।

जलने के बाद लगे कुछ था ही नहीं
थी बस कपूर की बटी
बस थोड़ा सा ताप गीले तटका।[4]

व्यक्ति और समाज को आगे बढ़ाने कि प्रक्रिया में नई और पुरानी पीढ़ी का साथ आवश्यक है। जिस प्रकार वृक्ष से पुराने पत्ते झड़ने के बाद नये पत्तों का जन्म होता है, उसी प्रकार पुरानी जड़ परम्पराओं को खत्म होने से नये मानव मूल्य जन्म लेते हैं और समाज विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर होता है। व्यक्ति और समाज के लिए परिवर्तन जरूरी है और उपयोगी भी। इसीलिए समाज मूलक चेतना को प्रकट करना है तो पुरातन परम्पराओं और मूल्यों में परिवर्तन लाकर नये जीवन मूल्यों को लाने की वकालत करते हुए कवि कहते हैं :

"एक झड़ता है
एक उगता है
एक ही डाल पर एक पुराना रूक्ष पत्ता
और सटे हुए एक नयी पत्ती जल भरी।"[5]

समाज में बुराइयों को समाप्त करके की अच्छाइयों का रोपण कर सकते हैं। समाज के प्रतिभाशाली युवा उच्च शिक्षा ग्रहण कर रोजगार के लिए विदेश चले जाते हैं। उनके पीछे माता-पिता देश में रहकर अन्य लोगों के सहारे सेवा कराते हुए किस तरह अपना जीवन यापन करते हैं। अरुण कमल ने उनकी मानसिक स्थिति का अनुभव किया है। वे लिखते हैं :

मुझे वो बुजुर्गवार कभी नहीं भूलता जिसके बच्चे विलायत में थे
और जो बिल्कुल अकेला अपने फ्लेट में
जौ के दानों से दिन गिन रहा था
कोई वैसी बीमारी न थी, बस वह बूढा व अकेला था
तभी मैं उसकी सेवा में आया।"[6]

समाज में बूढा व्यक्ति अपने बेटे के बिना जीवन-यापन करते हुए अकेलेपन की पीड़ा को भोगते हुए मानसिक रूप से कितना परेशान है। उसके दुख को कवि अरूण कमल ने 'सेवक' नामक कविता में व्यक्त किया है।

मानवीय सन्दर्भ

साहित्य का उद्देश्य मनुष्य को उच्च भावभूमि पर अवस्थित करना है। व्यक्ति को संकीर्णता, अवसाद, चिंता से मुक्त करना है। अपनी परम्पराओं और संस्कृति से दूर जाकर मनुष्य अनेक समस्याओं से घिर गया है। अपने आप को समेट लेने का कारण भी यह परिस्थिति निर्मित हुई है। वे लिखते हैं :

एक अंधेरा जो सब अंधेरे से
बड़ा और घना है
छोटे दिमांग का अंधेरा। [7]

कवि अरूण कमल व्यक्ति कि मानसिक संकीर्णता, अवसाद और चिन्ता के प्रति बहुत चिन्तित हैं। वे मानते हैं कि हमें आज ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता है ताकि 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को अपना कर हम मानवता के रास्ते पर चल सकें। युग के अवसाद और चिन्ता को समाप्त कर, मानवीय गुणों को अपनाने के लिए हमें वर्तमान संकीर्णता, स्वार्थपरताता और अंहकार जैसे अंधेरे से बाहर निकल कर नैतिक मूल्यों को अपनाने कि आवश्यकता है।

कवि ने मानवीय मूल्यों को बनाये रखने के लिए सुख-दुःख में साथ रहने की परम्परा को बनाये

रखने पर जोर दिया है। वर्तमान में अनेक अच्छी परम्पराएं खत्म हो रही हैं। दया, स्नेह, मिलनसारिता, सहानुभूति जैसे नैतिक मूल्य समाप्त हो चुके हैं। मनुष्यता का कितना विघटन हो चुका है कि मृतक के परिवार को सांत्वना देने के लिए न समय है न शब्द हैं। मानवीय गुणों में धर्म का अनुसरण, दया, सहानुभूति और करुणा मुख्य हैं, परंतु वर्तमान युग में सभी कुछ सूख-सा गया है। इसी भाव को कवि ने अपनी 'स्थिति' कविता में व्यक्त किया है-

कोई भी तैयार नहीं बैंठने को उसके पास
जो अग्नि देकर आया है
जो जवान बेटे को फूंककर आया है।"[8]

कवि ने मानवीय संवेदनाओं के प्रति सचेत रहने पर जोर दिया है। मानवीय गुणों के ह्रास पर कवि चिन्तित है। उनका तर्क है कि समाज में मनुष्यता और मानवीय गुणों के प्रति लगाव रहना चाहिए तभी तो उसमें से नई कोंपले फूटेंगी, जो नई सभ्यता के विकास में सहायक सिद्ध होगी।

कवि अतीत से सीखने तथा मानवीय संवेदनाओ को बचाए रखने का आग्रह करते हैं-

जो नया जीवन रच रहे हैं
जो उठा रहे हैं नई भित्तियां
उनके ही जिम्मे है खण्डहरों को बचाने का भार।"[9]

कवि अरूण कमल का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति की महत्ती जिम्मेदारी है कि वह मानवीय गुणों को ग्रहण करे तथा समाज में जो भी अन्याय करते हैं तथा अत्याचार करते हैं उनका विरोध करे, ताकि समाज में हर व्यक्ति को न्याय मिल पाए तथा समाज में शांति की स्थापना हो सके -

"वहां मुक्ति के लिए लड़ता है आदमी
वहां कुछ भी नहीं हैं गुप्त
फिर भी तुम चुप क्यों हो ?"[10]

वर्तमान दौर में संवेदनाएँ समाप्त हो रही हैं। मृत्यु के बाद क्रियाकर्म के समय भी लोग हंसी मजाक व बुराइया निकालने में व्यस्त रहते हैं, पास ही पुत्र रो रहा है, किन्तु अन्य लोगों को कोई फिक्र नहीं है। मानवीय गुणों की कमी को कवि अरूण कमल ने व्यक्त किया हैं -

"घाट पर तीन शव जल रहे थे
यह अन्तिम था
पुत्र रो रहा था
और लोग भी
साथ-साथ लोग भी हंसी मजाक भी कर रहे थे।"[11]

मानवीय गुणों को अपनाकर ही लोग उत्तम समाज का निर्माण कर सकते हैं। अरुण कमल ने समाज के अवगुणों को व्यक्त कर समाज के सामने प्रकट किया है, ताकि समाज को आदर्श समाज के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। वर्तमान पीढ़ी के लिए युद्ध और तबाहियां ही शेष है, ऐसा प्रतीत होता है। मानवीय गुणों का त्याग होगा तो ऐसी ही परिस्थितियां प्राप्त होगी। महामारियों का प्रकोप सब बीसवीं शताब्दी की अंतिम पीढ़ी के लिए ही है, ऐसा कवि अरूण कमल ने व्यक्त किया है-

"ईसा की बीसवीं शताब्दी की अन्तिम पीढ़ी के लिए
वे सारे युद्ध और तबाहियां
मेला उखड़ने के बाद का कचड़ा महामारियां
समुद्र में डुबता सबसे प्राचीन बन्दरगाह
और टूट कर गिरता सर्वोच्च शिखर
सब हमारे लिए।"[12]

अरुण कमल ने सूक्ष्म अवलोकन से उन स्थितियों को अपने काव्य का विषय बनाया है,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जिनकी आम जनजीवन में उपेक्षा कर दी जाती है। श्राद्ध का अन्न खाने के बाद ग्रामीण मृतक के आचार-व्यवहार पर ठहाके लगाते हुए व्यंजनों के स्वाद का वर्णन करते हैं। मृत के अवगुणों का वर्णन असभ्यता की निशानी है। एक दृश्य देखिये:

"श्राद्ध का अन्न खा लोट रहे हैं तेज कदम
दूर गांव के ग्रामीण जोर-जोर से बतियाते
व्यंजनों का स्वाद मृतक का आचार व्यवहार
लगाते ठहाका।"[13]

निष्कर्ष

अरूण कमल ने अपनी रचनाओं से समकालीन परिदृश्य तथा विभिन्न संदर्भों में समाज को नई दिशा प्रदान करने की कोशिश की है। अरुण कमल की कविता हिन्दी की प्रगतिशील चेतना की कविता है। जिसमें व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश तथा सामाजिक विषमता पर तीखा प्रहार है। समकालीन कविता यथार्थपरक है। इसमें केवल संवेदना और भावुकता नहीं है। समकालीन कवि आसपास घटित होने वाली प्रत्येक स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। कवि अरूण कमल ने सामाजिक वार्तावरण को यथार्थता के साथ व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 अरुण कमल, अपनी केवल धार, खबर, पृष्ठ 15
2 अरुण कमल, अपनी केवल धार, होटल, पृष्ठ 16
3 अरुण कमल, अपनी केवल धार, धरती और भार, पृष्ठ 19
4 अरुण कमल, नये इलाके में, काष्ठ खण्ड की गाथा, पृष्ठ 28
5 अरुण कमल, सबूत, झड़ना, पृष्ठ 27
6 अरुण कमल, मैं वो शंख महाशंख, सेवक, पृष्ठ 16-17
7 अरुण कमल, अपनी केवल धार, पृथ्वी किस लिए घूमती है, पृष्ठ 29
8 अरुण कमल, सबूत, स्थिति, पृष्ठ 55
9 अरुण कमल, सबूत, मानुष गंध पृष्ठ 30
10 अरुण कमल, सबूत, तुम चुप क्यों हो पृष्ठ 61
11 अरुण कमल, मैं वो शंख महाशंख, क्रिया, पृष्ठ 45
12 अरुण कमल, पुतली में संसार, अपनी पीढ़ी के लिए, पृष्ठ 45
13 अरुण कमल, नये इलाके में, श्राद्ध का अन्न, पृष्ठ 51